श्री शिवानुसन्धानम्

प्रकाशिका
श्री शान्ति देवी बजाज।
६, कालीकृष्ण ठाकुर स्ट्रीट,
कलकत्ता।

श्री शिवानुसन्धानम्

प्रकाशिका—

श्री शान्तिदेवी बजाज ।

६, कालीकृष्ण ठाकुर ष्ट्रीट, कलकत्ता ।
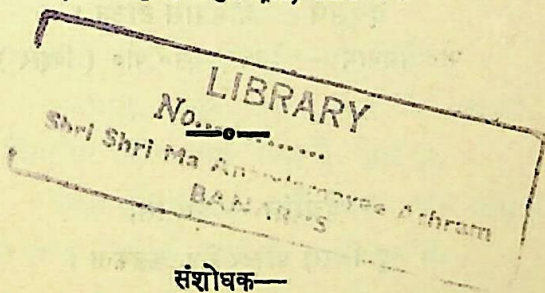
संशोधक—

पंडित श्री काशीनाथ झा,

श्यामामन्दिर, बनारस ।

संवत् २०१३

मुमुक्षु जिज्ञासुओं को धर्मार्थ वितरण के उद्देश्य से यह पुस्तक छपवाकर प्रकाशित की गई।

प्राप्तिस्थान—

देवसंघ — बोमपास टाउन।

पो० वैद्यनाथ — देवघर, एस० पी० (बिहार)

देवसंघ — ४८ सि,

दुर्गाचरण डाक्टर रोड, कलकत्ता।

श्रीकैलासाश्रम

-+:※:+-

शस्य श्यामला जहाँ प्रकृति इठलाती रहती,
भागीरथी पुनीत जहाँ सुन्दर तम बहती।
जहां हिमालय मौन मन्द नित है मुस्काता,
अमृत भरे अथाह जहाँ मारुत गति पाता ॥१॥
टिहरी राज्य विशाल जहाँ से प्रारम्भिक है,
बहती जहाँ चन्द्रभागा सरिता लौकिक है।
हृषीकेश से वहीं दूर कुछ सुन्दर पथ पर,
आश्रम है कैलास सुशोभित अतिशय सुखकर ॥२॥
लघुतम किन्तु विचित्र पहाड़ी पर वह आश्रम,
सदा साधना भरे और अति अतुलित संयम।

स्वान्तः सुख को सदा बिखेरा करता प्रतिपल,
ब्रह्म वेद सच्चरित साधुता का वक्षस्थल ॥३॥
विस्तृत है अद्वैत सत्य सिद्धान्त जहां पर,
है निवृत्ति का केन्द्र महान विचक्षण गुरुतर।
वासनादि जग के विकार से दूर दूर है,
मोहावेश महान अन्ध अज्ञान चूर है ॥४॥
मौन जहाँ एकान्त साधनायें होती हैं,
और त्याग का बीज जहाँ सुन्दर बोती हैं।
विश्वनाथ का वहीं मनोहर मन्दिर सुखकर,
शोभित हैं भगवान जगद्गुरु श्री शंकर ॥
परमहंस विद्वद्वरिष्ठ श्री शान्ति सुधाकर,
श्री विष्णु देवानन्द गिरि विद्या के सागर।
मंडलेश हैं जहाँ वहाँ कैलास धाम है,
साधु जहाँ वेदान्त केसरी अति विद्वान हैं ॥६॥
षट् दर्शन षट् शास्त्र-उपनिषद जहाँ सुखद है,
चारों वेद सदैव जहाँ शुभ मंगल प्रद हैं।
ऐसा एक मनोज्ञ वहां विद्या मन्दिर है,
प्राचीरों पर लिखी जहाँ श्रुतियां सुन्दर हैं ॥७॥
जहाँ धर्म सत्संग सनातन साध समागम,

होता है नित जहाँ वेद पढ़ने का ही श्रम।
सोहं सोहं जहाँ विहग संगीत सुनाते,
ब्रह्मवाद कीर्ति पथिक उर में उपजाते ॥८॥
जहां ऐक्य रस में विभोर हैं जग के प्राणी,
ज्ञान सुधा में लीन जहाँ होती है वाणी।
जहाँ साधुओं का अनन्दमय सुन्दर जग है,
वह आश्रम कैलास मुक्ति का सुन्दर मग है ॥९॥

—खेमका बन्धु

———

अथ शिव प्रार्थना प्रारम्भः

—:०:—

गौरी शंकर दीन दयाला। प्रभु जो मैंनूं करो निहाला
सत संतोष शील मोहि दीजो। मेरे दोष दूर सब कीजो।१।
दया नम्रता मन में आवे। मन भोगन में कभी न जावे
पर पीड़न से चित्त हटावो, पाप कर्म से मोहि बचाओ।२।
निर्मल चित्त करो प्रभु मेरा, निशदिन भजन करूँ मैं तेरा
येही कामना मेरी स्वामी, पूरण करो प्रभु अंतरयामी।३।

जबलग कृपा न तुमरी होवे, तबलग वृथा जन्म नर खोवे
माया के वश पड़ा भुलाना, बार बार दुख पावे नाना ४।

विन संतोष न सुख कहिं होवे, भटक भटक नर जीवन खोवे
अन्तकाल रो रो पछतावे, गया समाँ फिर हाथ न आवे ।५।

भोग शोक की खान बखाने, तिन से मन कबहुँ न अघाने
ग्लानि योग्य जे वस्तु सारी, तिन में प्रेम मूढ़ को भारी ।६।

छोड़ा चाहे कबहुँ न छिनको, जिनमें काल छुड़ावे तिनको
आप छोड़ जो तुमको ध्यावे, सो नर सहज मुक्ति को पावे ।७।

काम क्रोध मद लोभ घनेरे, प्रभु जी जग में बैरी मेरे
भगवन् इनसे मोहि बचाओ, निज चरणों का दास बनाओ।८।

दुख मोचन है नाम तुम्हारा, मैं दुखी हूँ जग में भारा
और न जग में ऐसा कोई, करुणा करे दीन पर जोई ।९।

माता पिता तुम बंधु मेरे, चरण गहूँ मैं प्रभु जी तेरे
सब में अपना रूप दिखाओ, जन्म मरण के फंद छुड़ावो ।१०।

भव सागर है अतिशय घोरा, देख देख हिय डरपत मोरा
रागादिक हैं ग्राह भयंकर, तिनसे मुझे बचावो शंकर ।११।

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे, सब में दर्शन पाऊं तेरे
रागादिक सब दोष मिटाऊं, जन्म मरण में कभी न आऊं ।१२।

बार बार विनती करूँ, सुनिये दीन दयाल।
कृपा दृष्टि करके मुझे, करिये वेग निहाल ॥१३॥

अथ ज्ञान रसायन प्रारम्भः

ऐतवार मेरे मन विचार आया पुण्य कर्म से मैं नर शरीर पाया।
द्वारा मोक्षदा एही शरीर सुणयां चल्लनहार सुणयाँ जिवें मेघछाया।
कौण यतन होवे दुःखमूल नाशे औसर छोड़ना योग्यना हत्थ आया
दुःखसिंह में पड़ेसी खान गोते जिनां भुल्ला जहानसे नेह लाया।१।
सोमवार संसार सब झूठ जाणा ब्रह्म सत्य जाणा सुजन पास जाके
भोग जान लीते सभी दोष वाले इच्छा दूर होई सत संग पाके
मन आया ऐसा जदों जोर मारा मोक्षकामना ने चित्त बिच्च आके
ब्रह्मनिष्ठ जो वेद के पारदर्शी ऐसे गुरां के पास मैं जाऊँ धाके।२।
मंगलवार उपहार ले जाय ऐसे गुरुदेव के चरण पर शीश धरया
हाथ जोड़ के एही मैं प्रश्नकीता दुःखसिंधु संसार किम जाय तरया
ताप हरण सुखदेन गुरुदेव बोले वचन दयारूपी अमृतनाल भरया
ब्रह्मबोध बिन दुख ना दूर होवें पुत्र वेदने एही उपदेश करया।३।
यथा एक सूरज उदक भाजनों में भिन्न २ हुआ नजर आऊँदा है

कहीं दिखे चंचलअचल वड़ाछोटा मलिन विमल हो कहीं सुहाऊँदा है
इसी भांति जो धारके देह नाना भिन्न २ निज रूप दिखलाऊँदा है
सोई एक चेतन है स्वरूपतेरा इसी बात को वेद समझाऊँदा है।४।
गगन एक जैसे मिल उपाधियों से घटाकाश आदि नामरूप वाला
दिखे गोल चौकोर रज धूम भरया कहीं अल्प भासे किसीमेंविशाला
इस भांति मिल देह मन आदिसे जो सुधी मूढ़ भासे दुखी गोरकाला
सोई एक चेतन है स्वरूप तेरा जगतरचा जिसने महानाट्यशाला।५।
बुधवार जाग्रत स्वप्न सुप्तिमें जो ज्योति रूप परपंच को भासदा है
देखनहार अन्तःकरण वृत्तियांदा साक्षीनित्य उनके उदय नाशदा है
पंचकोश से भिन्न निर्लेप सबके हृदय गुफा में सदा प्रकाशदा है
सोई ब्रह्म मैं हूँ एही ज्ञान बेटा छेदन करनवाला मोह फांसदा है।६।
वही एक चेतन अनुस्यूत सब में फुल्लां विच्च जैसे एक डोर बेटा।
सृष्टि पालना प्रलय सब खेल उसके जीव ईसना है कोई होर बेटा
वही बना नारी पुरुष रूप वोही वृद्ध युवा है वोही किशोर बेटा।
वही कृष्ण वही बना आप गोपी वही चंद ते वही चकोर बेटा।७।
बीर वार अंन्तःकरण साथ मिलने कर्त्ता भोक्ता आपको मानदा है
भिन्न हुआ वी देहमन इन्द्रियांते उनके धर्म अपने कर बखानदा है
वेदवाक्य सुन दूर अग्यान करके साक्षी बिमल जो आपको जानदा है
सोई ब्रह्म तेरा है स्वरूप बेटा एही ग्यान हेतु दुख हानदा है।८।

सदानन्द सिंधु है स्वरूप तेरा भुल्ल दुखी तैं आपको मान लीता।
दुख मूल कर्त्तृत्व अभिमान बेटा बार बार आखे एही कृष्णगीता
सोई सुखी संसार में हुआ जिसने कर्ता भोक्ता भाव को दूर कीता
मुँहमोड़ संसार से गुरां कोलों ब्रह्मज्ञान रूपी अमृत जाय पीता।९।
शुक्रवार वाणी नयन प्रानप्रेरक स्वप्नतुल्य जिसने जगतजाल ताना
नारद मुनीने सनत्कुमारजी से जिसे सुना भूमा सुख स्वरूप जाना
श्वेतकेतु ने पिता के वाक्यसुण जो त्रिविधभेदसे हीन निजरूप माना
सोई ब्रह्म मैं हूँ इसी ज्ञानसे तूं पुत्र दूर करके भीतिजनक नाना।१०।
स्वप्न बीच जैसे सिंह सर्प आदि कल्प आप आपे डरा भागदा है
सिंह सर्प आदि नहीं खौफ कोई द्रष्टा एक भासे जदों जागदा है
इसी भांति संसारसब कल्प आपे फँसा दुख भोगन आप लागदा है
दुःख दूर होवें महानन्द पाकेजदों नींद अज्ञान को त्यागदा है।११।
शनिवार उपदेश सुन जाण लीता निज स्वरूप मैंने दूर होई माया
नामरूप अज्ञान को विदाकीता अस्तिभाति प्रियरूप सब नजर आया
भूल दूर करके ब्रह्मानन्द सिन्धु मेरा रूप हस्तामलक सा दिखाया
विद्यानिधि सद्गुरु ने दया कीती दुख दूर हुए मैं आराम पाया।१२।

अथ ज्ञानगोविन्द प्रारम्भः

चेतर चेतन देव को सब में जानो एक।
देहेन्द्रिय मन बुद्धि से उसका करो विवेक॥

उसका करो विवेक कल्पना से जगस्रष्टा ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति में जो है सबका द्रष्टा ॥
कर्तृतादि से दीन सोई है रूप तुमारा ।
साक्षी स्वयं प्रकाश ब्रह्म से नहीं नियारा ॥
विशाख बिसारो जगत की वार्ता भजो महेश ।
जो चाहो भव दुःख से बचणा बिना कलेश ॥
बचणा बिना कलेश राग अरु द्वेष त्यागो ।
पर निन्दा की बात करन तुम कभी न लागो ॥
मान बड़ाई छोड़ ईर्षा दूर नसावो ।
सबको अपने तुल्य जानो ना किसे सताओ ॥२॥
जेठ जान तूँ आपको पूरण परमानन्द ।
सदा एकरस अजब तूँ सब दुनियाँ का चन्द ॥
सब दुनियाँ का चन्द दरस जब तेरा पावे ।
तन मन शीतल होय ताप नेड़े नहिं आवे ॥
होय अन्धेरा दूर भ्रान्ति सब मन की छूटे ।
जाण अपणा आप ग्रंथि चिज्जड़ की टूटे ॥३॥
हाड हटा मन सबन से निशि दिन भज भगवान ।
कच्चे घट के नीर सम जीवन को तू जाण ॥
जीवन को तूँ जाण पलोपल बीता जावे ।
गया अमोलक स्वास लाल फिर हाथ न आवे ॥

मन की मन में रहे कामना पूरी न होवें।
काल व्याल मुख पड़े मूढ़ मींडक से रोवें ॥४॥
सावन साधू संगकर दुर्जन का लड़ छोड़।
चिंतन कर भगवान् का विषयन से मुख मोड़ ॥
विषयन से मुख मोड़ भोग सब जग के फीके।
बिन विचार के किये लगे नीरस भी नीके ॥
विषय वासना मिटे चित्त निर्मलता पावे।
जिसका चिंतन करे आप सोई हौ जावे ॥५॥
भादों भरम गुआय के देखा अपना आप।
कहन सुनन की रुचि गई जपना रहा न जाप ॥
जपना रह न जाप द्वैत का गंध न पावे।
सदानन्द चिद्रूप एक ही नजरी आवे ॥
होवे बड़ा अचर्ज जगत वह कहां बिलाया।
कहां गया अज्ञान मुझे जिसने भरमाया ॥६॥
अस्सू आशा दुःख है सुख है आशा त्याग।
आन बनी में खुश रहो जान आपना भाग ॥
जान आपना भाग किसी को दोष न देना।
पूर्व किया जो कर्म उसी का फल आलेना ॥
सदा करो शुभ कर्म पाप से चित्त हटावो।
चौरासी के बीच फेर तुम कभी न आवो ॥७॥

कत्तक करना योग्य है मानुष तन को धार।
सावधान हो हर भजन दूजा पर उपकार॥
दूजा पर उपकार काय मन धन से जैसा।
अपने से हो सके उचित है करना वैसा॥
सबमें भगवद् भाव न आनो मन में दूजा।
वेद शास्त्र मुनि कही एहो है परमा पूजा॥८॥
मंगसर माया ईशकी जिस वश पड़ा अजान।
कर्त्तव्य अपना भूलकर विचरे पशू समान॥
विचरे पशू समान खान पानादिक पाकर।
धन्य आपको कहै लोक में बड़ा कहा कर॥
धराधाम धन मस्त मूढ़ परलोक न माने।
क्या होवे यम पास जाय पीछें पछताने॥९॥
पौष पराक्रम करा निज तोड़ा माया जाल।
मानुष तन को पाय के सोई हुआ निहाल॥
सोई हुआ निहाल लाल माई का कोई।
प्रभु चिंतन में मगन कामना जिसने खोई॥
जाना जगत असार सार जिस रूप पछाना।
प्रारब्ध को भोग छोड़ दिया आना जाना॥१०॥
माघ महाप्रभु को भजो छोड़ जगत जंजाल।
अन्तकाल शंकर बिना किने न जाणा नाल॥

किने न जाणा नाल प्रेम चाहे हो कितना।
धर्म चलेगा साथ करोगे प्यारे जितना ॥
मोक्ष द्वार नर देह पाय विरथा जो सोवे।
उससे बढ़कर कौन महापशु जग में होवे ॥११॥
फागण फाँसी काटकर दूर किये तिन ताप।
देहादि से भिन्न जिन जाना अपना आप ॥
जाना अपना आप निरंजन घट घट वासी।
सकल दुःख से रहित सदा अद्वय अविनाशी॥
रज्जु भुजंग समान जगत सब जिसमें भासे।
जिसके दर्शन किये मूल के सहित विनाशे ॥१२॥

———

अथ ज्ञानगंगा प्रारम्भः

—:※:—

अब भी समझो कुछ नहीं बिगड़ा महादेव को याद करो।
मानुष तनको पाकर प्यारे क्यों बिरथा वरबाद करो॥
करणधार गुरु से मिल करलो तुम विचार अब मौका है।
भवसागर के पार तरण को नर शरीर यह नौका है॥
कर विचार जब देखा जग में कहीं भी सुख नहिं लौका है।
राग द्वेष मद मोह शोक से भरा जगत घर भौ का है॥

भाई बहिन सुत पति पतनी धी साथ बना यह धौका है।
सोच समझ कर देखो जगमें जीवन यह कब लौका है॥
बीत गई को जाण दियो तुम अब ना कछु विषाद करो।
मानुष तनको पाकर प्यारे क्यों बिरथा बरबाद करो॥१॥
मानुष जीवन दुर्लभ प्यारे छिन छिन घटता जाता है।
लाख करोड़ा खर्च करो इक पलक हाथ नहिं आता है॥
खान पान पहरान नींद में मूरख जनम गंवाता है।
झूठ ईर्षा निंदा छल बल करके पाप कमाता है॥
क्रोधादि के बस में पड़कर जलता आप जलाता है।
औरों को भी पाप कर्म से मनको नहीं हटाता है॥
छोड़ पाप का पंथ सदा तुम शिव शिव शिव शिव नाद करो।
मानुष तनको० ॥२॥
जिसमें मन को लगावोगे तुम वोही तुमें रुवावेगा।
छोड़ किसी को जाणा तुमने तुमें छोड़ कोई जावेगा॥
जब लग काम चलेगा तुम से सब कोई आण बुलावेगा।
तुमरी विपत में आकर तुमको कोई न मुख दिखलावेगा॥
स्वारथ के बन्धू सब जग में काम कोई न आवेगा।
अन्तकाल में बिन शंकर के कोई ना साथ निभावेगा।
सावधान हो शंकर सुमरो ना निष्फल बकवाद करो।
मानुष तनको० ॥३॥

धन्य पुरुष है वही जगत में जिसने जन्म सुधार लिया।
त्रिविध दुःख के सिंधु जगत से अपना आप उद्धार लिया॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति का जो साक्षी उसे पिछान लिया।
पंचकोष से न्यारा करके ब्रह्मरूप जिन जान लिया॥
तोड़ बन्धन को जन्म मरण का झगड़ा जिसने दूर किया।
मन अपने को सबसे हटाकर निजानन्द में चूर किया॥
शिव स्वरूप तुम जानो सबको किसी से नहीं विवाद करो।
मानुष तन को पाकर प्यारे क्यों विरथा बरबाद करो॥४॥
तूंही सच्चिदानन्द मुक्त है तूंही है अद्वय अविनाशी।
भूल आपको अपने आप तैं गले में डाली है फाँसी॥
महाराज तूं दीन दुखी का भोगे भूल कलेशों को।
जो सुख चाहे सदा अचल तो मान वेद उपदेशों को॥
छोड़ वासना सब भोगन की वशकर मन इन्द्रिय गणको।
द्वन्द सहन कर क्षुधा पिपासा दूर छोड़दे दुर्जन को॥
समित्पाणि हो अति विनीत तूं जा मिल ऐसे गुरुजनको।
ब्रह्मनिष्ठ हो वेद निपुण जो शुभ चिंतक हो सब जनको॥
सुन उपदेश तूं देख आपको तूंही तो घट-घट परकाशी।
भूल आपको आपने आप तैं गले में डाली है फाँसी॥१॥
सुख स्वरूप तूं है अगाध तेरे इक कण को ले सारे।
सुखी मान रहे अपने आप को ब्रह्मादिक न्यारे-न्यारे॥

अज्ञान नींद के स्वप्न जगत में पड़ा भूल उसको प्यारे।
तूं फिरे ढूँढ़ता सुख को जगत में विषयों के लारे लारे॥
मृग तृष्णाजल भोग जगत् के सुखते हीन है वे सारे।
कस्तूरी मृग जिसमें भरमता दुख पावें भारे-भारे।
जरा अंतर्मुख हो देख तूंही तो सदा निरंजन सुखराशी।
भूल आप को० ॥२॥

जन्म मरण है धर्म देह के तूं अपने में क्यों माने।
क्षुधा पिपासा प्राण धर्म हैं अपने कर तूं क्यों जाने॥
शोक मोह हैं धर्म चित्त के तूं अपने में क्यों ठाने।
आना जाना धर्मलिङ्ग का अपने में तूं क्यों साने॥
तूं असंग साक्षी इन सब का जगत जाल तूंही ताने।
चार वेद को खोज देखले सभी के हैं यही माने॥
तूं अखण्ड शिव सत्यरूप है जगत सभी यह है नाशी।
भूल आप को० ॥३॥

नहीं भेद का गंध है तोमें तूंही तो है सबका प्यारा।
अन्तर्यामी रूप सभी का तूं ही तो है पालन हारा॥
आकाशवत् तु सबमें अनुगत हुआ भी है सबसे न्यारा।
सब कुछ कर्ता तोऊ अकर्ता अचरज है यही भारा॥
डर तेरे से अपने नियम पर चले चाँद सूरज तारा।
रज्जु भुजंग के मानिंद तुझ में दिखता है यह जग सारा॥

विद्या निधि तूं अजर अमर है तूं हीं तो है घट घट वासी।
भूल आपको अपने आप तैं गले में डाली है फांसो ॥४॥
जाना जगत असार सभी हम किसी की हमको चाह नहीं।
अपनी मौज में मस्त हुए हम दूजे की परवाह नहीं ॥
पंच भूत का बना देह यह मेरा इसमें योग नहीं।
तन मन के हम देखन हारे हमको कोई रोग नहीं ॥
भाई बहन सुत मन की कल्पना मेरा जग में कोई नहीं।
देह योग से नाते सब ये मेरा तो अब सोई नहीं ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति का अब हम में कोई निशान नहीं।
बंध मोक्ष हैं धर्म हमारे इसमें कोई प्रमाण नहीं ॥
हम अगाध सुखसिंधु जगत में हमरी किसी को थाह नहीं।
अपनी मौज में मस्त हुए हम दूजे की परवाह नहीं ॥१॥
दुर्गा शंकर हमी तो हैं अरु विष्णु हमीको कहते हैं।
ब्रह्मा इंदर और गणपति हमरा भेद नहिं सहते हैं ॥
वेद शास्त्र सब हमरी महिमा प्रेम लगाकर गाते हैं।
निखिल चराचर मन्दिर हमरे दिल को खोल बतलाते हैं ॥
पूजा हमारी सब जग करता पूजक भी तो हमी रहे।
अपना पूज्य से भेद मानना पशु भाव यह वेद कहे ॥
हम अनन्त घट घट के बासी हमरी कोई पनाह नहीं।
अपनी मौज० ॥२॥

जन्म मरण अरु जरा आदिका हममें कोई भी काम नहीं।
तुरिया पद में आसन हमरा द्वैत का हम में नाम नहीं॥
अस्ति भाति प्रियता हमरी सब चीजों में दमक रही।
सूर्य चन्द्रमा अग्नि में ये ज्योति हमारी चमक रही॥
अस्ति भाति प्रिय अलग करो तो नाम रूप कोई चीज नहीं॥
हमसे अलग कर सोच देख लो कोई जगत का बीज नहीं॥
वायु सुखा सकता नहिं हमको अग्नि से भी दाह नहीं॥
अपनी मौज० ॥३॥

जन्म मरण का काम नहीं अब कर्म पोट को पटक दिया।
मूल अविद्या इल्लत को हम छोड़ किनारे सटक दिया॥
निरावरण हम ब्रह्म रूप हैं हमी तो अद्वय अविनाशी॥
निराकार हम निर्बिकार हैं हमीं तो सत् चित् सुखराशी॥
जीव ईश सब रूप हमारे सब से निराले हमी तो हैं।
जान आपको खुद मस्ती से मतवाले भी हमीं तो हैं॥
परिच्छेद, हमरा नहिं हममें वर्ष अयन ऋतु माह नहीं।
अपनी मौज० ॥४॥

दुःख रूप जाना जिन जग को सबसे नाता तोड़ दिया।
सोई सुखी है ग में जिसने हर से मन को जोड़ दिया॥
गर्भवास के दुःख याद कर क्या कह करके आया तूं।
जन्म धार कर भूल उसे अब विषयों में लिपटाया तूं॥

धन, जन, मद से मस्त हुआ जो शंकर को भुल जाता है।
मोक्ष मार्ग को छोड़ चुरासी चक्कर में पड़ जाता है॥
पशु पक्षी अरु कीट हुआ तू नाना विध दुख पावेगा।
कभी स्वर्ग में जाकर के तब फेर नरक में आवेगा॥
सारासार विचार देख जन विषयों से मुख मोड़ लिया।
सोई सुखी है जग में जिसने हर से मन को जोड़ लिया॥१॥
बुद्धि रूपी चतुर सारथी मन लगाम कस लेता है।
इन्द्रिय रूपी घोड़ों को वह कुपथ जान नहिं देता है॥
तन रथ बैठे आत्म देव का मारग कष्ट मिटाता है।
जहां कहे वह बड़े प्रेम से उसे वहाँ ले जाता है॥
स्वर्गादि का भ्रमण कराकर ब्रह्म लोक पहुँचावेगा।
जहाँ पहुँचकर आत्मदेव फिर लौट कभी नहिं आवेगा॥
निजानन्द में मग्न हुआ तब आना जाना छोड़ दिया।
सोई सुखी० ॥२॥
मानुष तन दुर्लभ को पाकर वृथा न खोना चाहिये।
भवसागर से पार तरण को चिन्त्रित होना चाहिये॥
छल निन्दादि पाप कर्म का भार न ढोना चाहिये।
श्रेष्ठ कर्म से प्रेम लगाकर मन को धोना चाहिये॥
श्रद्धा से तर मनो भूमि में ज्ञान बीज बोना चाहिये।
महादेव में चित्त लगाकर दुनियाँ से हटना चाहिये॥

ज्ञान पाय जिन मूल अविद्या दुखका भाँड़ा फोड़ दिया।
सोई सुखी० ॥३॥

सद्गुरु की करुणा से जिसने ब्रह्मरूप को जान लिया।
अन्तर्यामी सब देहों में चेतन एक पिछान लिया॥
जन्म-मरण से रहित सदा जो सबका देखनहारा है।
ना वह कर्ता ना वह भोक्ता मन धर्मों से न्यारा है॥
चिज्जड़ ग्रन्थी टूट गई तब कर्मपाश का नाश हुआ।
शोक मोह को दूर हटाकर निजानंदका प्रकाश हुआ।
अविनाशी सुख पाकर जिसने मन से द्वैत विछोड़ दिया।
सोई सुखो० ॥४॥

कर विचार हम देखा जग में और नहीं कोई दूजा है।
तन मन धन से लोक सभी शिव करते तेरी पूजा हैं।
गंगा तेरी स्वच्छ तनू जिन पाप पुञ्ज का नाश करा।
मर्त्यलोक में आकर जिसने भागीरथ का शोक हरा॥
व्यासा में तू निस दिन बसया मुनि को तुही विपास करा।
बसे शारदा बीच सदा तूँ यमुना तैने रूप धरा॥
सयू, कृष्णा, कावेरी में मही शतद्रू में तूँ रहता।
नर्मदादि में बसता तूँ है निगम हमें एही करता॥
अन्तर्यामी सबका तूँ एक भेद किसी ने बूझा है।
कर विचार० ॥१॥

बद्रीनाथ केदार तुँही है तुंगनाथ कहलाता है।
जगन्नाथ रामेश्वर तूं है तूंही जग उपजाता है॥
तुँही द्वारकाधीश सदाशिव विश्वनाथ कहलाता है।
सूर्य चन्द्रमा अग्नि रूप हो सबका काम चलाता है॥
भूमि पवन जल गगन रूप तूं तूँही यज्ञ रचाता है।
यम कुवेर इंद्रादि रूप हो तूँही भोग लगाता है॥
येही वेद का सार किसी विरलेही जन को सूझा है।
कर विचार० ॥२॥

पत्थर में हम देखा तुझको मिट्टी में भी जान लिया।
राँगे पित्तल ताँबे में हम तेरा रूप पहचान लिया॥
पिप्पल तुलसी में तूँ बसता बटको तैं निज धाम किया।
कल्पवृक्ष में बैठा तूँ है माँगा जो सो दान दिया॥
बहुत कहना निष्फल है जिन सोचा उसने जान लिया।
तुझसे भिन्न कछू नहिं जग में वेदों ने यह ज्ञान दिया॥
मिट्टी से कछु भिन्न नहीं है जो घट मट अरु कूजा है॥
कर विचार० ॥३॥

एक हुआ भी सब देहों में दीख रहा तूं है जाना।
जिसने सोचा तेरा भेद औपाधिक उसने माना॥
नामरूप को प्रकट किया तैं कर प्रवेश हमने जाना।
जीव जब हों भासे सब में वेदों का यही जाना।

जिसने देखा सबमें तुमको उसे रहा नहीं कुछ पाना।
कर्म बंधन को तोड़ दिया तब दूर हुआ आना जाना ॥
माता पिता गुरु जन तूंही है तूंही पुत्र तनूजा है।
कर विचार० ॥४॥

—:❀:—

श्री गंगाजी की आरती

—:०:—

जै जै गंगे मैय्या तुमको लाखों प्रणाम
भोग मोक्षकी दाता तुमको लाखों प्रणाम
पाप नाशनी नाम तुम्हारा, भागीरथ ने यही उचारा
ब्रह्म लोक से निकसी धारा, मोक्ष पठाने वाली तुमको०
जो कोई शरण तुम्हारी आवे, सप्त सरोवर डूब लगावे
स्वर्ग लोक को सीधा जावे, हरिरस देने वाली तुमको०
कलियुग में सतयुग बर्ताया, भक्ति का तैं द्वार खुलाया

जीवोंको शुभकर्म लगाया, भक्ति बढ़ानेवाली ...तुमको०
सत्य सनातन श्री गंगाजी, सब जीवोंका दुख हरना जी
देकर ज्ञान पार करनाजी, सब सुख देनेवाली ...तुमको०
रिसियानंद है शरण तुम्हारी, भूल क्षमा हो अरज हमारी
काटे दुःख भवसागर भारी, पार तारने वाली ...तुमको०

रटो मेरी रसना

—०:❀:०—

रटो मेरी रसना हरे हरे राम
गर्भ वासमें भक्ती कबूली, बाहर आकर
फिरी फिरी राम ॥१॥ रटो मेरी०
राजी होकर पाप कमाया भोगन की बखत
डरी डरी राम ॥२॥ रटो मेरी०
खटरस मिठरस अति प्रिय लागे
राम भजनको मरी मरी राम ॥३॥ रटो मेरी०
चुन चुन कलियन बाग लगाया
मालन तोड़े कली राम ॥४॥ रटो मेरी०
वृन्दावनकी कुंज गलिन में राधे नाचे
खड़ी खड़ी राम ॥५॥ रटो मेरी०

कहें कबीर सुनो भाई साधो
सूवा पढ़ावत गनका तरी तरो राम ॥६॥

गुरु के समान

—:o*o:—

गुरु के समान नहीं दूसरा जहान में
गुरु ब्रह्मरूप जानो, शिव का सरूप जानो
साक्षात् ब्रह्मरूप मानो, लिखा है पुराण में ॥१॥ गुरु०
पापसे बचावें गुरु, ज्ञान को सिखावें गुरु
ब्रह्मसे मिलावें गुरु, तुरिया पद ध्यानमें ॥२॥ गुरु०
यही श्रुति वेद कहता, गुरु विन ज्ञान कैसा
ज्ञान बिन मुक्ति कैसी, आवे तेरे ध्यानमें ॥३॥ गुरु०
छल कपट त्याग दीजै, गुरुजीकी सेवा कीजै
सतगुरु की शरना लीजे, खेलिये मैदान में ॥४॥ गुरु०
ओ३म् शान्तिः ३

महा मन्त्र

महा मंत्र है ये जपा कर जपा कर
हरिओम् तत्सत् हरि ओम् तत्सत्

जभी स्वांस जावे धुनि हो जबां पर—हरिओम्०

असुरने जो अगनी का खम्भा रचा था
वो निर्दोष प्रहलाद क्यों कर बचा था
वे थे कौन से शब्द उसकी जबां पर—हरिओम्०

अगर घेर ले दुष्ट चांडाल कोई
नहीं पास में हो हथियार कोई
तभी बोल उठिये वहां पर संभलकर—हरिओम्०

लगी आग लंका में हलचल मची थी
विभीषण की कुटिया कैसे बची थी लिखे थे
यही अक्षर उसकी कुटी पर—हरिओम्०

एक दिन जो बोली हिमाचल कुंवारी
वो है कौनसा मंत्र कल्याणकारी
बोले त्रिलोचन महादेव शंकर—हरिओम्०

मिलाते हैं गांधर्व जिस दिन तंबूरा
जिससे गुंज उठता है ब्रह्मांड पूरा
निकलते हैं तारों से येही शुद्ध अक्षर
हरि ओम् तत्सत् हरिओम् तत्सत्

स्वामी सिद्धनाथ

भगवत्प्रार्थना

आवो पूज्य पिता भगवान, करदो जीवन का कल्याण
तुम हो परम कृपा के सागर, तुम हो गुण मन्दिर नटनागर
आवो आवो हे भगवान, करदो जीवन का कल्याण ॥१॥
तुमहो सत्य सनातन स्वामी, सब घट व्यापी अन्तर्यामी
हम सब धरें तुम्हारा ध्यान, करदो जीवन का कल्याण ॥२॥
जग में बड़े बड़े दुख पाये, हम सब शरण तुम्हारे आये
हरलो हरलो दुःख महान्, करदो जीवन का कल्याण ॥३॥
हम सब बनें सत्य व्रत धारी, शम दम शौर्य धैर्य गुणकारी
होवें अर्जुन भीष्म समान, करदो जीवन का कल्याण ॥४॥
ब्रह्मानन्द विनय सुन लीजे, प्रभु प्रिय भक्ति अपनी दीजे
हम सब बनें पूर्ण विद्वान, करदो जीवन का कल्याण ॥५॥

स्वामी चैतन्य गिरि

अथ गागर में सागर

—*—

एकम एक अखंड शिव, नाना धारे रूप।
कहीं मूढ़ कहिं सुघड़ है, कहीं रंक कहिं भूप ॥१॥

दुतिया दुतिया भाव है, सब दुखों का मूल।
स्वप्रकाश सुख ब्रह्म तूं, जीव बन कर भूल ॥ २ ॥

तृतिया तीनो ताप तब, जन के होवें दूर।
सबमें देखे राम को, होय रहा भरपूर ॥ ३ ॥

चौथ चतुरता एही है, मानुष तन को पाय।
दर्शन कर भगवन्त का, कभी न आवे जाय ॥ ४ ॥

पँचमी पाँचों दमन कर, शांत चित्त हो देख।
स्वप्रकाश साक्षी तुहीं, भासे सदा अलेख ॥ ५ ॥

छट छाया है ईश की, माया जिसका नाम।
तिसके बश में जीव पड़, भूल गया निज काम ॥ ६ ॥

सत्तै सात्विक बृत्ति जब, महावाक्य से होय।
पावे पद निर्वाण मग, मूल अविद्या खोय ॥ ७ ॥

अट्ठे आठो यामकर, सोहं २ जाप।
सब तेरे मिट जायँगे, भव दव दारुण ताप ॥ ८ ॥

नौमी नौका तरण को, भवसागर के जान।
महादेव निज जाप का, करना निशदिन ध्यान ॥ ९ ॥

दशमी दश दिक हो रहा, महादेव भर पूर।
जिन देखा उसने किए, अपने सब दुख दूर ॥१०॥

ग्यारस गोबिंद भजन कर, छोड़ बृथा सब काम।
भगत प्रेम के वश हुआ, घर में आवे राम ॥११॥

बारस बाहर वृत्ति का, रोक लगा शिव ध्यान।
शिव स्वरूप हो जायगा, मनमें और न आन ॥१२॥

तेरस तेरे में नहीं, देहादिक का मेल।
तेरे विमल प्रकाश से, करते हैं सब खेल ॥१३॥

चौदस चेतन देव हैं, सब देहों में एक।
भिन्न भिन्न होय भासता, जब लग नहीं विवेक ॥१४॥

मस्या माया वश पड़ा, भूल गया निज रूप।
दीन हुआ डोलत फिरै, सारे जग का भूप ॥१५॥

पूरणमा पूरण भये, सारे उसके काम।
निखिल चराचर जगत में, देखा जिसने राम ॥१६॥

अथ उपदेशामृत

रे मूरख अजहूं समझ औसर बीता जाय।
भवसागर के तरण का करले कछू उपाय।
करले कछू उपाय काय मन आदि जौ लौं।
स्वस्थ सकल संघात उचित है करना तौ लौं॥

जरा आदि जब ग्रसे तभी कछु बन नहीं आवे
गृह जलने के समय कूप कब खोदा जावे ॥१॥
खप खप के मरता रहे मूरख जिन दिन रात।
एक घड़ी भजता नहीं शिव शिव शिव जग तात ॥
शिव शिव शिव जगतात भजन विन सुख नहीं पाता।
दुर्लभ मानुष जन्म भंग के भाड़े जाता।
चिंतामणि को छोड़ काच से नेह लगावे।
बार बार यम द्वार जायके डन्डे खावे ॥२॥
साक्षी हो संसार में देख सबन के भेष।
ना काहू से राग कर ना काहू से द्वेष ॥
ना काहू से द्वेष है सुख का एही मारग।
चिंतन कर निज रूप का हो भवसागर से पारग ॥
सदानन्द चिद्रूप तुँही है सब में बसता।
राग द्वेष को छोड़ बिचर तू जग में हँसता ॥३॥
नाना विध दुःख देत है मैं मेरी यह भूल।
मैं मेरी का त्यागना सदानन्द का मूल ॥४॥

बिना जाने मीन ग्रसे मारू युत कंटक को, ज्ञान बिना पड़ता पतंग दीप ज्वाल में। बूझे बिना गजराज वाड़े फसत, आय बोध बिना मृग फसे फांधिन के जाल में। जानते हैं नर

सब भोगन को दुख भरे तोऊ जाके पड़त है भोगने की नाल में,
अचरज मोह महिमा जानी न पड़त कछु जाके वश पड़े ते
पड़त भवजाल में ॥१॥

सर्वं शिवमस्तु ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!

❋ ॐ ❋

आओ मित्रों सब मिल रट लो, ॐ ॐ ॐ हरि ॐ ॐ ॐ ॥टेक॥
परम पुरुषने सृष्टि रचाई, ॐकार की रचना पाई ॥१॥
पहिले मन्त्र उपाय प्यारा, ओम ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम् ।
रच्यो निरंजन आदि भवानी, उन सृष्टि की रचना ठानी ॥२॥
पहिले शब्द उचारा प्यारा, ओम् ओम् ओम् हरिओम ओम् ओम् ।
ॐकार से अंड उपजाया, ब्रह्मा विष्णु शंभु उपजाया ॥३॥
इन तीनों मिल बोला प्यारा, ओम्ओम् ओम् हरिओम् ओम् ओम् ।
वेदोव्यास वशिष्ठादि सारे, सुरनर मुनि जन सब यह उचारे ॥४॥
नारद वीणा तार बजावे, ओम् ओम् ओम् हरिओम् ओम् ओम् ।
चारु वेद पुरान अठारह, षट् शास्त्र उपनिषद् सारे ॥५॥
सब में पहिले लिखा मंत्र एक, ओम् ओम्ओम्हरि ओम्ओम् ओम् ।
योगी योग ध्यान चित लावें, उलट समाधि प्राण चढ़ावें ॥६॥
द्वादस परेभी देखा प्यारा, ओम् ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम् ।

जड़ चेतन सब में हैं भाई, ओम् बिना कोई खाली नाहीं ॥७॥
रोम रोम रग रगमें बोले ओम् ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम्।
ओम् और राम एक है भाई, इनमें मत समझो द्वितायाई ॥८॥
प्रेम प्रीति से पढ़ो मंत्र एक, ओम् ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम्
सबसे पहिले ओम् कहाया, सबके अन्त में ओम् रहाया ॥६॥
आदि अनादि रहे मंत्र एक, ओम् ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम् ॥
नारी पुरुष रटो सब कोई, ऊंच नीच इनमें नहिं होई ॥१०॥
जो ध्यावे सो पावे प्यारा, ओम् ओम् ओम् हरि ओम् ओम् ओम्
ओम् आत्मा है सबही का, यही रूप है निज तुमही का ॥११॥
समझो जिनको सदा शुद्ध एक, ओम्ओम्ओम्हरिओम्ओम्ओम्।
सत गुरु हरि यह युक्ति बताई, मोहन रामने महिमा गाई ॥१२॥
सबका प्राणअधार है प्यारा, ओम्ओम्ओम् हरिओम्ओम्ओम्।

—+: ❋ :+—

॥ ॐ ॥

श्री मद्भगवन्नाम संकीर्तनम्

जय शङ्कर शङ्कर महादेव—शिव शर्व रुद्र भव भर्ग देव
महाकाल कालीश नमो वः—भवानीश भव भर्ग नमो वः
मृडानीशमृडरुद्रनमो वः—शिवाधीश शिवशर्वनमोवः । जय०

जय काली शंकर काली—शङ्कर काली शङ्कर काली
जय गौरी शङ्कर गौरी शङ्कर—गौरी शङ्कर गौरी। जय०

हेरम्ब गजानन लम्बोदर—द्वैमातुर नाथ गणाधिपते
विघ्नेश गणेश गुणैक निधे—गुरु रूपतया बस मे सविधे
लघु रूपतया बस मे सविधे—शिव जप तया.........।
निज जप तया ....जय शङ्कर०

जय राम राम जय राम घनश्याम राम सुख धाम

देवसंघ से प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें।

ब्रह्मचारी श्रीमत् नरेन्द्रनाथ जी प्रणीत।

	मूल्य
हैमवती दर्शन—बंगला तथा हिन्दी	१)
मन्त्र और पूजा रहस्य—(बंगला) २) (हिन्दी)	१॥०)
साधनार गृहे (बंगला)	१॥०)
सत्येर पथ वा आमिर सन्धान (बंगला)	॥०)
ब्रह्मर्षि श्री श्री सत्यदेव जी की जीवनी (बंगला)	१।०)
पीठी ते साधना ओ उपलब्धि (बंगला)	१)
दश महाविद्या कौन ? (बंगला ओ हिन्दी)	॥०)
नवदुर्गा कौन ? (हिन्दी-बंगला)	।०)
आशारवाणी (बंगला)	—)
श्री गुरुलाभ ओ दाक्षिणात्य तीर्थ दर्शन- श्रीयुक्ता वासन्ती देवी प्रणीत (बंगला)	४)
आश्रमाचार्य श्रीमत् नरेन्द्रनाथ ब्रह्मचारी जी महाराज का चित्र (फोटो)	१।०)
देवसंघ आश्रम का त्रैमासिक मुखपत्र (हिन्दी) "दिव्यःदर्शन"। वार्षिक मूल्य २), सहायक	४)